सँख्याः 444/XXIV-3/2005

प्रेषक,

राजेन्द्र सिंह,
उप सचिव,
उत्तरॉचल शासन।

सेवा में,

निदेशक,
विद्यालयी शिक्षा,
उत्तरॉचल,देहरादून।

शिक्षा अनुभाग–3 देहरादून दिनॉक 29 दिसम्बर ,2005

विषयः पं0 गोविन्द बल्लभ पंत पुस्तकालय हल्द्वानी, नैनीताल के भवन निर्माण हेतु धनराशि की स्वीकृति।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र संख्या नियोजन–4/ 48279/ अशा0 पुस्त0 को के0 सहा0 /2005–06 दिनॉक 21–12–2005के सन्दर्भ में एवं शासनादेश सँख्याः सी0एम0 79/XXIV-2/2005 दिनॉक 30 मार्च, 2005 के कम में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि राज्यपाल महोदय पं0 गोविन्द बल्लभ पंत पुस्तकालय हल्द्वानी, नैनीताल के भवन निर्माण हेतु अनुमोदित लागत रू0 27.79 लाख के सापेक्ष पूर्व स्वीकृत धनराशि रू0 20.00 लाख को समायोजित करते हुए देय अवशेष सम्पूर्ण धनराशि रू0 7.79 लाख (रूपये सात लाख उनासी हजार मात्र) की धनराशि को शासनादेश संख्याः 630/ XXIV.2/2004 दिनॉक 29–4––2005 एवं शासनादेश संख्या 33/ XXIV.3/2004 दिनॉक 21–11–2005 द्वारा प्रश्नगत योजनान्तर्गत आपके निवर्तन पर रखी गयी कुल धनराशि रू0 7.79 लाख में से व्यय करने की सहर्ष स्वीकृति निम्नलिखित प्रतिबन्धों के अधीन प्रदान करते हैंः–

(1)– आगणन में उल्लिखित दरों का विश्लेषण विभाग के अधीक्षण अभियन्ता द्वारा स्वीकृत/अनुमोदित दरों को जो दरें शिडयूल आफ रेट में स्वीकृत नहीं हैं, अथवा बाजार भाव से ली गयी हों, की स्वीकृति नियमानुसार अधीक्षण अभियन्ता का अनुमोदन आवश्यक होगा।

(2)– कार्य कराने से पूर्व विस्तृत आगणन/ मानचित्र गठित कर नियमानुसार सक्षम प्राधिकारी से प्राविधिक स्वीकृति प्राप्त करनी होगी, बिना प्राविधिक स्वीकृति के कार्य प्रारम्भ न किया जाय।

(3)– कार्य पर उतना ही व्यय किया जाय जितना कि स्वीकृत नार्म है, स्वीकृत नार्म से अधिक व्यय कदापि न किया जाय।

(4)– एक मुश्त प्राविधान को कार्य करने से पूर्व विस्तृत आगणन गठित कर नियमानुसार सक्षम प्राधिकारी से स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक होगा।

(5) – कार्य कराने से पूर्व समस्त औपचारिकताएं तकनीकी दृष्टि के मध्य नजर रखते हुए एवं लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रचलित दरों / विशिष्टियों के अनुरूप ही कार्यों को सम्पादित कराते समय पालन करना सुनिश्चित करें।

(6)– कार्य कराने से पूर्व स्थल का भलीभॉति निरीक्षण उच्च अधिकारियों एवं भूगर्ववेत्ता के साथ अवश्य करा लें। निरीक्षण के बाद स्थल आवश्यकतानुसार निर्देशों तथा निरीक्षण टिप्पणी के अनुरूप कार्य किया जाए।

(7)– आगणन में जिन मदों हेतु जो राशि स्वीकृत की गयी है उसी मद पर व्यय किया जाय, एक मद का दूसरी मद में व्यय कदापि न किया जाय।

(8)– निर्माण सामग्री को प्रयोग में लाने से पूर्व किसी प्रयोगशाला से टेस्टिंग करा ली जाय तथा उपयुक्त पायी जानी वाली सामग्री को प्रयोग में लाया जाय।

(9)– निर्माण की गुणवत्ता के लिए संबंधित निर्माण ऐजेन्सी उत्तरदायी होगी। अनुमोदित लागत पर ही निर्माण कार्य को पूरा किया जाय। किसी भी दशा में आगणनों को पुनरीक्षित नहीं किया जायेगा।

2– उपर्युक्त धनराशि का व्यय वर्तमान वित्तीय नियमों के अनुसार किया जाय और जहॉ आवश्यक हो, व्यय करने से पूर्व सक्षम प्राधिकारी की प्राविधिक स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर ली जाय। स्वीकृत धनराशि का उपयोगिता प्रमाण पत्र निर्धारित प्रारूप पर यथा समय शासन तथा महालेखाकार को उपलब्ध करा दिया जाय। स्वीकृति की प्रत्याशा में अनानुमोदित व्यय कदापि न किया जाय।

3– इस सम्बन्ध में होने वाला व्यय चालू वित्तीय वर्ष 2005–06 के आय–व्ययक में अनुदान संख्या–11 के अधीन लेखा शीर्षक 2202–सामान्य शिक्षा– 02–माध्यमिक शिक्षा– आयोजनागत –800– अन्य व्यय –01–केन्द्रीय आयोजनागत / केन्द्र द्वारा पुरोनिधानित योजना–

0103–अशासकीय पुस्तकालयों को केन्द्रीय सहायता– 20– सहायक अनुदान /अंशदान/ राज सहायता के नामें डाला जायेगा।

4– यह आदेश वित्त विभाग के अशासकीय संख्या– 537/वित्त अनु0–3/2005 दिनाँक 28–12–2005 में प्राप्त उनकी सहमति से जारी किये जा रहे हैं।

भवदीय

(राजेन्द्र सिंह)
उप सचिव

संख्याः 444 (1)/ XXIV-3/2005 तद्दिनाँक।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषितः–

1– महालेखाकार,उत्तराँचल, देहरादून।
2 निजी सचिव,मा0 मुख्यमंत्री जी।
3– निजी सचिव, मा0 शिक्षा मंत्री जी।
4– जिलाधिकारी, नैनीताल ।
5– कोषाधिकारी, नैनीताल ।
6– जिला शिक्षा अधिकारी, नैनीताल ।
7– वित्त विभाग /नियेाजन प्रकोष्ठ।
8– संबंधित निर्माण ऐजेन्सी।
9– कम्प्यूटर सेल(वित्त विभाग)
10– एन0आई0सी0, सचिवालय परिसर, देहरादून।
11– गार्ड फाइल।

आज्ञा से,

(राजेन्द्र सिंह)
उप सचिव